लौहित्य साहित्य सेतु: सहयोगी विद्वानों द्वारा पुनरीक्षित द्विभाषिक ई-पत्रिका
वर्ष: 2, संख्या:3; जुलाई-दिसंबर, 2021

रे बड़े भाई

मूल(असमीया): हलीराम डेका
अनुवाद: पूजा बरुवा

दो-एक पुराने किस्म की घोड़ा-गाड़ी, दो-एक नई-पुरानी मोटर गाड़ी, दो-चार श्रांत भारवाही कुली इन सबके अनिश्चित समन्वय में रेल स्टेशन के पास स्थित गुवाहाटी-शिलांग मोटर स्टेशन गरज उठा है। वहाँ सारे काम धीरे-धीरे एक बिजली संचालित भारी घड़ी की तरह चलते हैं। देखने से लगता है मानो घड़ी बंद पड़ गई हो, लेकिन कुछ देर तक स्थिर नजरों से देखते रहने से पता चलता है कि मिनट का काँटा कूदकर उसके एक मिनट बैठे रहने के बाद जीवन का पूर्ण आभास देता है। ठीक उसीतरह स्टेशन के सभी काम समयानुसार आरंभ होते हैं, पर धीमी गति से। अमीर और गरीब के हिसाब से पांडु-शिलांग सर्विस की गाड़ियाँ अलग-अलग आती हैं। निर्धनों की गाड़ियाँ आकर काफी देर तक इंतजार करती रहती हैं, मालगाड़ियाँ श्रांत भाव से केसरिया रंग के साथ वैराग्य की आहें भर दो-एक करके गायब हो जाती हैं। यात्री सज-सँवरकर अपनी-अपनी गाड़ियों में चढ़ यात्रा करने के लिए शुभ-संकेत का इंतजार करते हैं, उनमें से एक-दो बार-बार चढ़-उतरकर अपनी विदग्धता का परिचय देते हैं और दूर देशों से पहली बार के लिए आए हुए अपरिचित यात्री चारों तरफ की शैल-श्रेणियों को देखकर सोचते हैं- कैसी अनंत पर्वतमाला की गर्भ में आत्मसमर्पण करने जा रहे हैं, भगवान सारथी बने रहें।

ऐसे ही एक क्षण में मटमैले फटे-पुराने कोट-पेंट पहने अठारह-बीस वर्षीय एक लड़का मोटर स्टेशन में देखा गया। उसके हाथ में एक बेंत था, चेचक के दाग भरे चेहरे पर एक हँसी थी, लेकिन उसमें दो चीजों की कमी थी- पैरों में जूते और आँखों में रोशनी। उसके रंग-ढंग से लगा कि उस जगह से वह अपरिचित नहीं है, बल्कि कुछ कुली-माली से भी वह परिचित है। क्योंकि उसके आने से चारों ओर से 'सुलतान' 'सुलतान' आवाजे आयी और लोग एकत्रित हो गए। वह हँसकर हिंदुस्तानी में बोला, 'आज मैं जाने आया हूँ।' सबने पूछा, 'कहाँ?' उसने जवाब दिया, 'शिलांग'। श्रोताओं को मजा आया और पूछा,

'क्यों?' उसने जवाब दिया, 'मेरे बड़े भाई की खबर लेने।' सभी ठहाके लगाकर हँस पड़ें- शायद अपनी आँखों का अभिमान और उसके अंधेपन का आलम्ब लेकर। उसने उस ओर ध्यान न देकर अपने काम को जरूरी साबित करने के लिए कहा- 'कई दिनों से बड़े भाई की खबर नहीं मिली।' वह खुद जाकर हड़बड़ाते हुए एक लंबी मोटर गाड़ी में चढ़ा। इनमें आधी जगह पर माल जाती है और आधी पर निम्न वर्ग के यात्री जा सकते हैं। 'अरे ओ, तेरे पास टिकट नहीं है, उतर'- यह कहकर किसी ने उसका हाथ पकड़ा और उसे उतार दिया। वह बिना किसी शिकायत के उतरकर बोला, 'बड़े भाई का पता नहीं मिला।' चारों ओर के लोग हँसे, शायद उन लोगों की हँसी उपहासभरी थी- अंधा और स्नेह का आकर्षण। अपनी असहायता के कारण उसकी आँखों से आँसू की झरी बहने लगी। लेकिन जैसे धूप के निकलने से क्षण में दूब से ओस की बूंदें गायब हो जाती हैं, उसीतरह उसके आँसू भी गायब हो गये। चेहरे पर एक स्निग्ध हँसी खिल उठी। उसने कबीर का दोहा गाना शुरू किया। क्या गीत, क्या आवाज थी! चारों ओर निस्तब्धता छा गई। शायद ज़्यादातर श्रोता हिन्दी नहीं समझते थे, शायद गाने की भाषा बहुतों के लिए अपरिचित थी, पर वह क्या सुधावर्षी गायकी थी! उसके चेचक के दाग से भरे चेहरे पर क्या अपूर्व सजीवता थी! पतले होंठों की क्या मधुर हँसी थी। अंत में कभी-कभी 'रे, रे, रे' ध्वनि उठती है। गायक की क्या मन प्राण हरनेवाली एकाग्रता थी। जाने के लिए उन्मुख यात्री गाड़ी से उतरकर गायक के पास आये, गाड़ियों के चालक वहाँ एकत्र हुए, मोटर-कम्पनी के कर्मचारियों द्वारा सावधान करने के बावजूद कोई नहीं हिला। ज्यादा पैसे देनेवाले यात्रियों में समय पर जाने के लिए उद्वेग बढ़ा। पर कम पैसों वाले यात्रियों की गाड़ियों को पहले ही जाना पड़ता है। वे क्या करें क्या न करें समझ नहीं पाये। कर्मचारियों में से एक ने पास आकर कहा- 'सुन, मैं तुझे यात्रियों की गाड़ियों में चढ़ने नहीं दे सकता, अगर तू चाहे तो खुली माल गाड़ी में चढ़कर जा सकता है । लेकिन बेटा वहाँ से अगर ऊखड़ गया तो मेरी गलती नहीं, तब तो मौत पक्की है।' वह आश्वस्त होकर बोला- 'कहीं भी जाऊँगा। बड़े भाई की कई दिनों से खबर नहीं मिली।' वह कर्मचारी बहुत सभ्य था, उसने पूछा, 'बड़ा भाई शिलांग में कहाँ रहता है?' उसने बहुत उत्सुकता से कहा, 'शिलांग में बाबू, शिलांग में।' एक कुली ने उसे एक खुली मालवाही मोटर गाड़ी के पास छोड़ दिया

और वह बिना किसी प्रयास के हाथी पर महावत के बैठने की तरह खुली मोटर गाड़ी की माल ले जानेवाली पीढ़ा पर देवराज इन्द्र के अंदाज में बैठ गया। श्रोताओं की भीड़ हटी, यात्री अपनी-अपनी गाड़ियों तक लौटे। एक-एक करके गाड़ियाँ बारी-बारी से भागने लगीं, पर वायुमंडल में तब तक सुलतान की उत्फुल्ल स्वरलहरी प्रिय मित्र की स्मृति की तरह सजग रही।

जब शाम को सुलतान शिलांग पहुँचा, तब बूँदाबाँदी बारिश हो रही थी। राजमार्ग की बिजली की बत्तियाँ दूर आकाश में लटकते हुए तारों की तरह निष्फल निस्तेज रोशनी फैला रही थीं। उनसे केवल गड्ढे और रास्ते का अंतर पहचाना जा सकता था, पर आबाल्य-अंधे सुलतान के लिए वे किस काम की? गाड़ी से उतरते ही जिस सभ्य इंसान की मदद से आकर वह यहाँ पहुँचा, उनकी आवाज सुनने के लिए उसने कान खड़े किये, पर नहीं सुन पाया। उनको उद्देश्य करके उसने आभार प्रकट किया और फटी टोपी पहनकर स्टेशन से बाहर निकलते हुए राजमार्ग पर खड़े होकर पैरों से संभल-संभल कर वह आगे बढ़ा। पास से कीचड़ छिड़काकर फड़फड़ाती हुई अमीरों की गाड़ियाँ आने-जाने लगीं। वह एक तरफ रास्ते के पास की ढलान और दूसरी तरफ गाड़ियों के कीचड़ की छींटों का अनुमान लगाता हुआ आगे बढ़ता चला।

सुलतान को अभी सोचने का मौका मिला कि उसका बड़ा भाई कहाँ रहता है वह नहीं जानता। किसीसे सुना था उसका बड़ा भाई किसी साहब के वहाँ रसोइया का काम करता है। पर कौन साहब, क्या करता है, कहाँ रहता है, उस बारे में वह कुछ भी नहीं जानता। साहब का नाम उसके लिए एक अद्भुत चीज है। सभी साहबों के नाम अबोध्य हैं। उसने मन में सोचा न जाने कौन से साहब थे। नाम सुना भी था तो भी भूल गया, न भी सुना होगा तो भी अब उसके लिए जानना जरूरी था। किसके पास जायेगा? उसका 'बड़ा भाई' उसे ही कौन जानता है ? बड़े भाई का नाम हुसैन था । उसने अपने ही मन में दुहराया, 'हुसैन सुलतान के बड़े भाई।' लेकिन हाय! गाँव में शायद यह नाम ही परिचय के लिए काफी होता, पर यह तो राजनगरी है। यहाँ निर्धन, असहायों का परिचय कहाँ? यहाँ लोगों को पहचाना जाता है पैसों से, लंबी उपाधियों से, बड़े-बड़े महलों से, बड़े ओहदों से। साहब का नाम मिल जाने से साहाबी पट्टी में जाकर बड़े भाई को खोज निकालना संभव हो भी सकता है। पर यह अंधेरा, ये बूँदाबाँदी बारिश, ये उल्टी-सीधी

उदासीन राजनगरी, वहाँ कौन किसकी मदद करता है? कौन राह दिखायेगा, खासकर इस अंधे, लाचार दिवाले लड़के को? वह मन ही मन सोचकर जा रहा है कि कैसे बड़े भाई को ढूँढा जाए। वह मन में ही 'रे बड़े भाई' कहकर चिल्ला उठता है। वह जानता है कि ऐसे चिल्लाने से कुछ नहीं होगा, धैर्य से और दो कदम वह आगे बढ़ता है।

धीरे-धीरे वह रास्ते पर लोगों की कमी महसूस करने लगा। उसे रात के घने सन्नाटे का आभास हुआ। भय और उद्वेग से उसका मन थोड़ा व्याकुल हो उठा, प्राण अनजाने में ही सिहर उठे। एक लंबी आह ने उसके क्लांत चेहरे को और अधिक मटमैला कर दिया। उसने अपनी झोली में हाथ डालकर रोटी का टुकड़ा या आधी पी हुई बीड़ी है कि नहीं देखा। कुछ नहीं है, थोड़ा हँसा। उसने असंतुष्टि का बोझ महसूस किया। बैठना चाहा पर कहाँ बैठे- जमीन भीगी थी। उसने फिर से हँसने की कोशिश की, आहें भरी। मन में याद किया-'रे बड़े भाई।'

धीरे-धीरे हवा तेज होती गई, बारिश की बूंदें बढ़ती गई, बादलों का गर्जन पर्वत-पहाड़ों में ध्वनित हुआ। बिजली ने आनेवाले खतरे का संकेत दिया। सुलतान ने सोचा, मौसम उसका घोर विरोधी है। रातभर के लिए भी सहारा मिल जाये तो शायद बुरा नहीं होगा, लेकिन इतनी रात को किसके पास आश्रय मांगने जायेगा? रास्ते से कुछ दूर गाड़ियों की घड़घड़ाहट, लोगों का शोर-गुल, हँसी-मजाक, औरतों का उल्लास उसके कानों में पड़ें। उसने सोचा, वहाँ गया तो शायद आश्रय मिल जायेगा। वहाँ पहुँचते न पहुँचते ही द्वारपाल ने पूछा- 'किससे मिलना है?' उसका हिन्दी संभाषण सुनकर उसने मन ही मन यह सोचा कि यह मेरे देश से है। इस से बड़े भाई की भी कुछ खबर मिल सकती है या कम से कम रात भर के लिए आश्रय सुनिश्चित है। वह जवाब दिये बिना पास चला गया। इसबार द्वारपाल का स्वर और कठोर हो गया। उसने एक ही सवाल फिर से पूछा, 'किससे मिलना है?' उसने कहा- 'देखो भाई, मैं आँख से देख नहीं सकता। बड़े भाई की तलाश में निकला हूँ। बड़े भाई का नाम हुसैन, मेरा नाम सुलतान, घर आरा जिले में है।' द्वारपाल ने कहा, 'यह साहबों का क्लब है। अभी यहाँ से हट जा, साहब-मेमसाहब जाने वाले हैं। कहीं गाड़ी के नीचे आ गया तो हड्डी-पसली टूटकर मरेगा, हट जा।' दरवाजे से थोड़ी दूर गाड़ियाँ ने पो-पो आवाज से संकेत दिया। मोटर गाड़ी की बत्ती की रोशनी से

सुलतान का छाया तक चमक उठा। गाड़ी से शराबी आवाज में अश्लील गालियाँ निकलीं। द्वारपाल ने गुस्से से सुलतान को हटा दिया। एकबार के लिए भी उसे आश्रय मांगने का मौका ही नहीं मिला। निराश्रित जीव को, रातभर के लिए सर के ऊपर एक छत, बाहर की भीगी जमीन के बदले हवा बारिश से बचने के लिए एक सूखी जमीन, भरपेट भात, एक सुखी रोटी या एक आधी जली हुई बीड़ी, तकिये के रूप में एक सूखी लकड़ी, कुछ भी नहीं मिला। मूसलाधार बारिश, निष्ठुर हवा, कड़ी ठंडी लगानेवाली प्रकृति का परिहास। उसने फिर से रास्ता नापा।

रास्ते पूरी तरह से सुनसान हो गये थें। किससे बड़े भाई के बारे में पूछे यह एक समस्या बन गयी। अचानक किसी के पैरों की आवाज सुनने से वह पूछता है- 'भाई, क्या आप बता सकते हैं कि मेरा बड़ा भाई कहाँ है? उसका नाम हुसैन है।' किसीसे कोई जवाब नहीं मिलता। धीरे-धीरे बारिश कम होने लगी, शरीर में ठंडी हवा थोड़ी अच्छी लगने लगी। वह ऊपर की तरफ नजर उठाकर बोला- 'हे खुदा मेरे बड़े भाई का पता दो। तुम जानते हो मैं शरीर से कमजोर हूँ, आँखों से नहीं देख सकता, अजनबी रास्तों में क्या तुम मेरी मदद नहीं करोगे?' भगवान ने कुछ नहीं कहा, बाहर भी कोई संकेत नहीं है। बड़े भाई का पता उतना ही अज्ञात रहा, आश्रय की आशा उतनी ही दूर रह गयी। उसके मन में एक अस्पष्ट प्रतिशोध की भावना जग उठी। इसका उद्देश्य कौन था वह नहीं बता सका, शायद उसका उद्देश्य भगवान थे। इस प्रतिशोध ने उसकी सुप्त अंतर्रात्मा जगा डाली। भगवान को विमुख करने के लिए जैसे उसने गाना शुरू किया। उस गीत के संबंध में कवि की भाषा में कहें तो -

से शुधु शुनेछे नीरव संध्या
नील निर्बाक सिंधुतले,
शुने गले याय आद्र हृदय
शिशिर शीतल अश्रुजले ।

कचनार की पंक्तियों ने मूकभाव से ही उस गीत की महत्ता की उपलब्धि की- किसी इंसान या भगवान की उस पर करुण दृष्टि नहीं पड़ी। झरने का झर-झर, पेड़ों के पत्तों पर पानी गिरने का सर-सर शब्द आदि सभी उसके कानों में पड़ते हैं, लेकिन उसकी यह असहाय पूकार किसी ने नहीं सुनी। दो-एक कदम से शरीर का बोझ लेकर घने अंधेरे में बड़े भाई को ढूँढते हुए अंधा आगे बढ़ा।

कुमारी साहेरा बानु लेडीकीन कॉलेज की अध्यापिका हैं। कॉलेज में गणित पढ़ाती

हैं- घर में साहित्य पढ़ती हैं। बातों-बातों में तर्क नहीं उठाती, प्रणय-शास्त्र में उनकी दखल कम है। वे नारी-प्रगति की समर्थक हैं, मन:स्तत्त्व विचार में (जिसका अर्वाचीन नाम किसी-किसी के अनुसार यौनतत्त्व है) वे पीछे हैं। कॉलेज में उन्हें मिस सहारा नाम मिला था। उनको झपकी लगी ही थी कि इतने में किसी का कोमल स्वर कानों में पड़ा। उन्होंने फिर से सुना। वह स्वर जैसे विषाद का था, पर दूसरी ओर जैसे चित्त-विनोदक भी। नींद टूटी तो उन्हें संगीत का स्वर सुनने को मिला। वे विस्तर छोड़कर बाहर आयी। आँगन में खड़ी हुईं। कड़ी ठंडी हवा, भारी बारिश में किसी ओर से जैसे आवेग-भरे गाने का स्वर हवा में बहता आया है । यह गीत सुखाभिलाषी के मृदु छन्द के प्रयत्न का गीत नहीं था, बल्कि किसी के अंत:स्थल की गहरी पुकार संगीत के रूप में विद्रोही का हृदय छेद कर, खून की बूंदें लेकर बाहर निकल आया था। देखते-देखते फिर से आसमान बादलों से भर गया। चारों ओर बादल घिरने लगें, बिजली ने विद्रोह की घोषणा की- बादलों के गर्जन में गीत का स्वर अस्पष्ट हो गया।

क्या तेज बारिश है। बार-बार घर के टिन की छट पर बारिश की मार पड़ने लगी। बारिश की छीटों से वे आधी भीग गईं, फिर भी मिस साहेरा उस गीत की माया और गायक की ममता को छोड़कर अंदर नहीं जा पायीं । थोड़ी देर बाद गीत गायब हो गया। बीच-बीच में उन्हें काटर सम्बोधन 'रे बड़े भाई' सुनने को मिला। एकबार सुना- 'कहाँ हो तुम? मैं तेरा भाई सुलतान। रे बड़े भाई ।' साहेरा के हृदय में सहानुभूति की नदी उमड़ पड़ी। वे समझ गयी कि किसी असहाय बालक का क्रंदन है। वे क्या करेंगी, नियम की बैरियों से जकड़ी हुई हैं। उन पर बालिका हॉस्टल की निगरानी का जिम्मेदारी है। नियम की बैरियों को कैसे तोड़े? अविवाहित महिला बाहर निकलकर निराश्रय पुरुष को क्या अंदर ला सकती हैं? लोग क्या कहेंगे? शायद कहीं इस सत प्रयास से उनकी रोजी रोटी छीन जाये। उन्होंने फिर से सुना 'रे बड़े भाई, मैं तेरा भाई सुलतान।' नियमों को पैरों से कुचलकर साहेरा निकल जायेगी, उसने द्वारपाल को ढूँढा, चाबी चाहिए।

फिर से गर्जन-बिजली का सुदीर्घ कंपन, बादलों का भीषण आर्तनाद, इन सबके साथ-साथ सुलतान के रोने की आवाज। इतने में ऊपर से जैसे आग का एक गोला गिरा। इसके बाद सबकुछ शांत हो गया। फिर से आवाज न सुन पाने के कारण साहेरा रोने की दिशा का अनुमान नहीं कर पायी।

सुबह उन्होंने देखा कि सुलतान का स्थिर शरीर बालिका हॉस्टल के दीवार की दूसरी ओर रास्ते के पास मैदान के किनारे पड़ा हुआ है।

मुसीबतों की रातों में आज भी साहेरा की नींद जब टूटती है तब उस आर्तनाद भरे गाने की प्रतिध्वनि सुनती है, इसके साथ-साथ उसकी सजल आँखों के सामने आता है, वह भातृवत्सल निर्जीव शरीर।

संपर्क-सूत्र:
अनुवादक
सहायक अध्यापिका
हिन्दी विभाग, नगांव महाविद्यालय (स्वतंत्र)